International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 11 Issue 09, September- 2021
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

राजस्थान के बारां जिले में सहरिया जनजति क्षेत्र में ग्रामीण–विकास का स्तर, विकास की सम्भावनायें एवं चुनौतियां

धर्मवीर मीना
सहायक आचार्य, राजनीति वज्ञान

राजकीय महा वद्यालय गंगापुर सटी

परिचय :–

यह शाश्वत् सत्य है कि 'समय' इस संसार की सबसे अमूल्य निधि है, किन्तु इसे वास्तविक अभिव्यक्ति 'विकास' से मिलती है, क्योंकि 'मानव सभ्यता एवं संस्कृति' के प्रत्येक काल का परिचायक विकास ही होता है, इसलिए आज हम विभिन्न कालों (ऐतिहासिक–काल) को ग्रीक, रोमन, इस्लामिक, इंग्लिश एवं अमेरिकन युग आदि नामों से जानते है, क्योंकि विकास के लिए परिस्थितियां आधार की भूमिका में होती है और परिस्थितियों का जन्म समय के गर्भ से होता है।

वस्तुतः विकास एक व्यापक अवधारणा है, जिसे समग्र के साथ व्यष्टिगत देखने की भी आवश्यकता है। इसी सन्दर्भ में आज हमें 21वीं सदी के ''भूमण्डलीकृत–युग'' में सतत् एवं समावेशी विकास के स्वप्न को साकार करने के लिए भारत के 'बीमारू राज्यों' में शामिल राजस्थान राज्य, इसके पिछड़े क्षेत्र बारां में विकास से कोसों दूर 'सहरिया जनजाति क्षेत्र' में विकास के स्तर को समझने की आवश्यकता है।

पृष्ठभूमि :–

बारां जिले में स्थित सहरिया जनजाति क्षेत्र राजस्थान के दक्षिण पूर्वी भाग में अवस्थित एक पठारी क्षेत्र है जो सांस्कृतिक दृष्टि से हाडौती–संस्कृति का भाग है।

वास्तव में यह क्षेत्र संसाधनों से तो परिपूर्ण है, लेकिन विकास से न जाने क्यों कोसों दूर है। इसी सन्दर्भ में हम ''सहरिया क्षेत्र के विकास'' को विशेष रूप से प्रकट करने का प्रयास करेंगे। साथ ही हम यह स्पष्ट करने का प्रयास करेंगे कि इस क्षेत्र में विकास की सम्भावनायें क्या हैं और यदि विकास की सम्भावनायें असीम है, तो फिर यह क्षेत्र और इस क्षेत्र के लोग अभी तक विकास की मुख्य धारा में शामिल क्यों नहीं हो पाये है। इस प्रकार हम सम्भावनाओं के साथ चुनौतियों का भी अध्ययन करेंगे और साथ ही समाधान एवं विकास के सुझाव भी प्रस्तुत करेंगे।

किन्तु यहां यह स्पष्ट करना भी अनिवार्य है कि विकास वास्तव में एक व्यापक अवधारणा है ओर हमने यहां विकास का सन्दर्भ ''ग्रामीण–विकास'' से लिया है, तो इसका कारण मूलतः यह है कि 'सहरिया जनजाति और विकास का सम्बन्ध ग्रामीण परिवेश से है,' क्योंकि सहरिया जनजाति का अधिकांश भाग गांवों में ही निवास करता है, और हमारे आर्थिक विश्लेषकों का भी यही मत् है क्योंकि आर्थिक दृष्टिकोण से गांव जहां पिछडेपन के परिचायक है क्योंकि गांव

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 11 Issue 09, September- 2021
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

औद्यागिकीरण जैसी विकासगम्य प्रक्रियाओ से दूर होते है, जबकि तीव्र औद्योगिकीरण एवं सेवा क्षेत्र के फैलाव आदि के कारण शहरों को विकास का इंजन माना जाता है।

वस्तुतः राजस्थान के 'सहरिया जनजाति क्षेत्र' को मालवा के पठार का हिस्सा माना जाता है, जो उर्वर भूमि, इमारती लकडी, मूल्यवान पत्थर, वन संपदा के साथ विभिन्न जातियों एवं विशेषतः जनजातियों का निवास स्थल है। इनमें सबसे महत्वपूर्ण जनजाति ''सहरिया'' जनजाति आज भी 'आदिम अवस्था' में ही अपना जीवन यापन कर रही है, और द्वितीय सहरिया जनजाति का निवास स्थल एकमात्र यही क्षेत्र है इसलिए उदयपुर जिले की 'कथौडी–जनजाति' एवं अंडमान निकोबार द्वीप समूह की 'जारवा जनजाति' के समान ही इस क्षेत्र में निवास करने वाली 'सहरिया जनजाति' के विकास के लिए सरकार द्वारा विशेष प्रयास किये जा रहे है।

लेकिन मूल प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि जनसंख्या में अच्छी उपस्थिति होने के बावजूद भी 'सहरिया जनजाति' को अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रही जारवा, कथौडी जैसी जनजातियों के समान संरक्षण की आवश्यकता क्यों पडी। यह अत्यंत ही गम्भीर प्रश्न है, क्योंकि इस क्षेत्र में विकास की समस्त दशायें मौजूद है, लेकिन 'विकास' इस क्षेत्र से कोसों दूर है। इस वस्तुस्थिति को प्रकट करने के लिए हमें इस क्षेत्र के समग्र विश्लेषण की आवश्यकता होगी, जिसमें भौगोलिक दशाओं और ऐतिहासिक परिवेश के साथ आर्थिक, राजनीतिक, सामाजशास्त्रीय एवं मानव विज्ञान जैसे विभिन्न दृष्टिकोणों को भी समाहित करना होगा।

वैसे तो भौगोलिक दशाओं के आधार पर यह क्षेत्र मानव नहीं बल्कि वन एवं वन्य जीवों का आश्रय स्थल रहा है, क्योंकि यह क्षेत्र उच्च ताप के साथ उच्च वर्षा प्राप्त क्षेत्र है, परिणामस्वरूप यहां उष्ण कटिबंधीय वनस्पति के साथ सदाबहार वनो का विकास हुआ है। इन्हीं दशाओं के कारण आज भी यह क्षेत्र निम्न जनसंख्या घनत्व वाला बना हुआ है। किन्तु ऐतिहासिक परिपेक्ष्य से यह क्षेत्र विशेष गतिविधियों वाला रहा है, क्योंकि विषम भौगोलिक दशाओं के कारण जहां यह क्षेत्र 'अभेद–दुर्ग' की भूमिका निभाता था, वहीं मालवा क्षेत्र से निकटता और दक्षिण भारत के लिए सुगम्य सुरक्षित मार्ग पर स्थित होने के कारण 'सामरिक केन्द्र' का काम करता है। शाहबाद का किला और मनोहरथाना क्षेत्र का बसाव इसको अभिव्यक्त करता है।

किन्तु 'आर्थिक एवं राजनीतिक दृष्टिकोण' से यह क्षेत्र इतिहास के प्रत्येक काल से ही उपेक्षित रहा है, जिसका परिणाम यह क्षेत्र आज भी भुगत रहा है और ऐसी स्थिति का मूल कारण इस क्षेत्र का 'राजनीति एवं आर्थिक गतिविधियों के मूल केन्द्र' से अत्यधिक दूर होना है। लेकिन 'सहरिया क्षेत्र की वस्तुस्थिति को समझने के लिए मानव विज्ञान एवं समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण को भी समझना होगा' क्योंकि समाज में व्यक्ति की स्थिति का निर्धारण व्यक्ति की मनोदशा एवं उसकी सामाजिक स्थिति से होता है, और समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से इस क्षेत्र के लोगों को द्रविड़ क्षेत्र का भाग नहीं होते हुए भी 'द्रविड़ संस्कृति का भाग माना, क्योंकि इस क्षेत्र के लोंगों की शारीरिक बनावट एवं रहन–सहन वैदिक आर्यन के अनुकूल नहीं थी' । शायद इसीलिए इन लोगों को समाज की 'चर्तुवर्णिक व्यवस्था से बाहर रखा और संसाधन सम्पन्न यह

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 11 Issue 09, September- 2021
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

क्षेत्र समाज की मुख्य धारा से विलग हो गया ' और स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरान्त विकास के लिए ऐसे क्षेत्र को जनजाति क्षेत्र एवं इसमें निवास करने वाले लोगों को जनजाति की संज्ञा दी गई।

सहरिया क्षेत्र में विकास के समक्ष चुनौतियां :–

विभिन्न दृष्टिकोंणो से 'सहरिया क्षेत्र को देखने के उपरान्त स्पष्ट होता है कि इस क्षेत्र का विकास निम्न कारणों से नहीं को सका :–

- सहरिया क्षेत्र के लोगों में समाज से अलगाव की स्थिति व्याप्त है, क्योंकि ये लोग स्वभाव से एकाकी, शंकालू, एवं भीरू प्रवृति के होते है।
- सहरिया क्षेत्र में डाकन, जादू–टोना, टोटके जैसी अनेकों सामाजिक कुरीतियां विद्यमान है।
- सहरिया क्षेत्र संसाधन सम्पन्न है, किन्तु परिवहन, ऊर्जा जैसे आधारभूत ढ़ॉचे के पूर्ण विकास के अभाव में संसाधनों का उचित दोहन नहीं हो सका।
- शैक्षणिक सुविधाओं के अभाव में यह क्षेत्र अशिक्षा की समस्या से पीड़ित रहा है।
- आरंभ से ही यह क्षेत्र सामाजिक शोषण का शिकार रहा ह, क्योंकि प्रथम दृष्टा तो इस क्षेत्र को समाज की चर्तुवर्णिक व्यवस्था में स्थान नहीं दिया गया और द्वितीय समाज के सक्षम वर्णों ने इस क्षेत्र को अपनी 'आरामस्थली' एवं यहां के लोगों को 'उपभोग वस्तु' के रूप में समझा।
- ऐतिहासिक काल से ही समाज सुधारकों, लेखकों, इतिहासकारों आदि के द्वारा 'सहरिया क्षेत्र' की समस्याओं को समाज के समक्ष वास्तविक ढंग से प्रस्तुत नहीं किया गया। परिणाम स्वरूप समस्यायें जस की तस बनी रहीं।
- इस क्षेत्र के लोगों में अशिक्षा के कारण जागरूकता का अभाव एवं राजनीतिक पिछडापन है। इसके परिणाम स्वरूप 'सहरिया लोग' विकास तो छोडो अपने अधिकारों तक को समझ नहीं सके है।
- जागरूकता की कमी के कारण बाह्य लोगों द्वारा इस क्षेत्र के संसाधनों का भरपूर शोषण किया गया है। परिणामस्वरूप ये लोग आज अपनी ''जमीन जल और जंगल'' से वंचित हो गये है।
- 'बेरोजगारी' इस क्षेत्र को प्रमुख समस्या है, जिसने इस क्षेत्र को आप–पास के क्षेत्रों से एकाकी, पिछडा एवं पीड़ित बना दिया है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 11 Issue 09, September- 2021
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

- यह क्षेत्र वास्तव में भूतकाल से प्रशासनिक उपेक्षा का शिकार रहा है, और बाह्य क्षेत्र से आये कर्मचारीगण इस क्षेत्र को 'काला पानी' की सजा के समान समझते आये है, इसलिए आज भी इस क्षेत्र की संस्थाओं में कर्मचारी एवं पदाधिकारियों की कमी है।

- प्रशासनिक समस्याओं के कारण आज भी इस क्षेत्र के लोगों को क्षेत्रीय विकास की कल्याणकारी योजनाओं का समुचित लाभ नहीं मिल पाता है।

- इस क्षेत्र के लोग सामाजिक मनोदशा के कारण अस्वस्थ्यकारी दशाओं में निवास करते है, जिसका परिणाम इन्हे 'कुपोषण एवं कमजोर स्वस्थ्य' के रूप में भुगतना पड रहा है।

- 'संक्रमित भौगोलिक' क्षेत्र होने के कारण इस क्षेत्र में आपराधिक गतिविधियों की व्यापकता है।

- आज भी इस क्षेत्र के बदहाल होने का मूल कारण यह है कि आरम्भ से ही स्वयं सेवी संस्थाओं ने इस क्षेत्र को अपनी सेवा का नहीं बल्कि अपनी आजीविका का माध्यम बनाया है।

- यह क्षेत्र आज भी 'पिछडेपन के कुचक्र' का शिकार है।

उपरोक्त कारणकारी दशायें आज भी इस क्षेत्र के विकास के समक्ष चुनौति बनकर खडी है परिणामस्वरूप विकास आज भी न सिर्फ अवरूद्व है, बल्कि पिछडेपन की स्थिति इतनी भयावह हो गई है कि यदि समाज में मानवता विद्यमान है तो सहरिया क्षेत्र में ग्रामीण विकास के लिए सोचना आज जीवन–मरण का प्रश्न बन गया है।

सहरिया क्षेत्र में विकास की सम्भावनायें :–

वास्तव में 'सहरिया क्षेत्र में ग्रामीण विकास' के सम्बन्ध में चुनौतियां अनेक है, लेकिन सम्भावनायें भी असीम है, क्योंकि यह क्षेत्र विभिन्न संसाधनों से परिपूर्ण है, इसलिए यहां विकास के लिए आवश्यक विभिन्न प्रकार की आर्थिक गतिविधियां सम्पन्न की जा सकती है, जैसे–विकास के लिए 'औद्योगिकरण' को आवश्यक माना जाता है और तीव्र औद्योगिकीरण के लिए यहां कच्चे माल और सस्ते श्रम के लिए जल–जमीन और जन की उपलब्धता है। इसी प्रकार पर्यावरण अनुकूल विकास के लिए पर्यटन पर बल दिया जाता है और पर्यटन के लिए यहां समृद्ध ऐतिहासिक विरासत–संस्कृति के साथ मनोहर प्रकृति मौजूद है।

उपरोक्त के अतिरिक्त विकास की सम्भावनाओं को साकार करने के लिए अन्य तरीके भी संभव है, लेकिन इसके लिए हमें सहृदय से व्यापक प्रयास करने होगें। इस सन्दर्भ में हमें 'विकास के लिए आवश्यक त्रिस्तरीय फार्मूला' के साथ पूर्व राष्ट्रपति डॉ. कलाम द्वारा प्रस्तुत ''पुरा–कार्यक्रम एवं मनरेगा को नवीन दृष्टिकोण'' से अपनाना होगा तब ही वैज्ञानिक ढंग से सरकारी प्रयासों के साथ जनसहभागिता से विकास के स्पप्न को साकार किया जा सकेगा।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 11 Issue 09, September- 2021
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

अनुसंधानात्मक प्र□न :–

उपरोक्त क्षेत्र में विकास की संभावनायें असीम है, किन्तु अनुसंधान की आवश्यकता इसलिए है क्योंकि इस क्षेत्र में विकास के लिए किये गये प्रयास आज भी अधूरे है, इसी लिए सहरिया जनजाति का जीवन एवं दशा सोचनीय है, जिसे मानवीय बनाने के लिए समस्या को मूल रूप से समझने का प्रयास करना होगा।

अन्तः अनु□ासनात्मक प्रासंगिकता :–

उपरोक्त अनुसंधान अन्तः अनुशासनात्मक दृष्टिकोण से विशेष प्रासंगिक है, क्योंकि अनुसंधान के उपरोक्त शीर्षक का सम्बन्ध बहुआयामी है, जैसे विकास के लिए औद्योगिकीकरण जैसी प्रक्रियाओं को अपनाना होता है और औद्योगिकीकरण के लिए कच्चा माल और सस्ते श्रम जैसी आवश्यकतायें होती है जिन्हे अनुसंधान शीर्षक में जल–जंगल–जमीन और जन के रूप में अभिव्यक्त किया है।

इसलिए शीर्षक के अन्तर्गत क्षेत्र में राजनीतिक सहभागिता के लिए जागरूकता पर बल है, ताकि अधिकारों के साथ लोकतंत्र जैसी धारणा को सबलता मिले। इसी प्रकार नशा, जुआ, वेश्यावृति जैसी समस्याओं से संबिन्धित होने के कारण इसका संबन्ध सामाजिक सरोकार से भी है। इस प्रकार वास्तव में यह शीर्षक क्षेत्रीय विकास के लिए अन्तःअनुशासनात्मक महत्व को प्रदर्शित करता है।

अनुसंधान का अवलोकन :–

अनुसंधान एक महत्वपूण कार्य है और सहरिया क्षेत्र में विकास की स्थिति के संबन्ध में अन्तराष्ट्रीय स्तर पर कार्य अभी तक नगण्य सा है, लेकिन राष्ट्रीय स्तर पर कुछ कार्य अवश्य हुआ है। जैसे डॉ. संतोष कुमार मीना ने बारां जिले में सहरिया जनजाति की सामाजिक आर्थिक एवं भौगोलिक स्थिति पर अपना शोध कार्य किया है, तो डॉ. विवेक शंकर ने अपना लघु अनुसंधान परियोजना सहरिया जनजाति पर ही पूर्ण किया है। इनके अतिरिक्त अन्य शोधार्थियों द्वारा भी इस क्षेत्र में शोध कार्य किये है।

किन्तु प्रत्येक अनुसंधान अपने लक्ष्य को पूर्णतः प्राप्त करने में असफल रहा है। इसलिए विशेष प्रयासों के साथ नवीन दृष्टिकोण से शोध कार्य करने की आवश्यकता है। ताकि उपेक्षित बारां जिले के सहरिया जनजाति क्षेत्र को विकास के साथ जोडा जा सके।

उद्दे□य :–

''राजस्थान के बारां जिले में सहरिया जनजाति क्षेत्र में ग्रामीण विकास का स्तर, विकास की सम्भावनायें एवं चुनौतियां'' नामक शीर्षक से अनुसंधान करने का मूल उद्देश्य उपेक्षित सहरिया क्षेत्र को विकास की मुख्य धारा से जोड़ना है। इसके लिए हमें इस क्षेत्र के लोगों में शिक्षा, स्वास्थ्य, जीवन–प्रत्याशा और प्रति व्यक्ति आय जैसे कई मानदण्डों को उच्च बनाने के लिए

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 11 Issue 09, September- 2021
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

प्रयास करने होगें। तब ही इस क्षेत्र में 'मानव विकास सूचकांक' के स्तर को एन.एस.ओ. एवं संयुक्त राष्ट्र मानव विकास सूचकांक जैसे पैमानों के स्तर तक पहुंचाया जा सकेगा।

इसके अतिरिक्त इस क्षेत्र में फैली बाल–विवाह, लैंगिक–भेदभाव, नशा, जुआ, वेश्यावृति जैसी सामाजिक कुरीतियों को दूर करने के लिए निवारणात्मक प्रयास करना ताकि सहरिया लोगों को समाज की मुख्य धारा में स्थान मिल सके। और राजनीतिक पटल पर अभी तक उपेक्षित रहे इस समुदाय के उचित प्रतिनिधित्व हेतु राजनीति सहभागिता बढाने हेतु प्रयास करना।

अध्ययन–प्राविधि :–

प्रस्तावित लघु शोध प्रबन्ध में ऐतिहासिक एवं विश्लेषणात्मक शोध पद्वति का प्रयोग किया जायेगा। पूर्व के अनुभवों से यह विदित हुआ है कि इस अविकसित क्षेत्र में शोध की प्रश्नावली एवं अनुसूची पद्वति के परिणाम प्रभावी नहीं रहे है। अतः द्वेवनिर्देशन पद्वति के प्रयोग से दस गांवों का चयन किया जायेगा एवं शोधकर्ता इन गांवों में व्यक्तिशः रह कर अर्द्व सहभागी अवलोकन के माध्यम से समस्याओं को समझने का पूर्ण प्रयास करेगा तथा चुनिंदा परिवारों से साक्षात्कार पद्वति के प्रयोग से समस्याओं के सम्पूर्ण आयामों को समझने का प्रयास किया जायेगा।

प्रस्ताविक लघु शोध प्रबन्ध में उक्त प्राथमिक शोध पद्वतियों के प्रयोग के साथ ही 'द्वितीयक शोध पद्वतियों' का भी प्रयोग किया जायेगा। सहरिया जीवन के विविध पक्षों को रेखांकित करने वाली पुस्तकों, शोध–प्रबन्धों, लघु शोध प्रबन्धों, राजकीय परियोजनाओं, विभिन्न समाचार पत्र–पत्रिकाओं के संदर्भों का प्रस्तावित अध्ययन सामग्री में प्रयोग किया जायेगा।

अध्याय योजना :–

1- राजस्थान में जनजाति समुदाय की सामाजिक आर्थिक एवं राजनीतिक पृष्ठभूमि।

2- सहरिया जनजाति की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं क्षेत्रीय विस्तार।

3- सहरिया जनजाति क्षेत्र में मुख्य विकासात्मक चुनौतियां एवं उनका स्परूप ।

4- सहरिया क्षेत्र के ग्रामीण–विकास हेतु निदानात्मक उपचार एवं योजनायें।

5- सहरिया क्षेत्र में ग्रामीण–विकास के प्रयासों का परिणाम एवं मूल्यांकन।

6- सहरिया क्षेत्र के सम्भाव्य विकास हेतु नवोन्मेषी प्रयास एवं सुझाव।

उपसंहार।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 11 Issue 09, September- 2021
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

निष्कर्ष :–

बारां जिले में अवस्थित 'सहरिया जनजाति क्षेत्र' वास्तव में आज भी सोचनीय स्थिति में है इसके कारण भले ही अभी तक कुछ भी रहे हो लेकिन अब इस क्षेत्र में 'ग्रामीण विकास के प्रश्न' को प्राथमिकता से लेने की आवश्यकता है। तब ही न सिर्फ ''सतत् एवं समावेशी–विकास का स्वप्न साकार किया जा सकेगा, अपितु उपरोक्त विकासगम्य प्रयासों सें ही समाज का एक वंचित, कमजोर और दुर्बल भाग समाज की मुख्य धारा में शामिल हो सकेगा और उपर्युक्त सकारात्मक परिणामों को राष्ट्रीय स्तर पर उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया जा सकेगा'' ताकि विकास के सहरिया प्रतिमान द्वारा नक्सलवाद जैसे समाज से भटके वर्ग को भी समाज की मुख्य धारा में शामिल होने के लिए प्रेरित किया जा सके।

लेकिन उपरोक्त सद्लक्ष्य की प्राप्ति के लिए सहृदय से बहुआयामी प्रयासों की आवश्यकता होगी।

संदर्भ सूची

1 राजस्थान पत्रिका

2 बारां जनजाति दर्पण

3 आलेख, बारां जिला कलेक्टर, राजस्थान

4 कशनगंज- शाहबाद क्षेत्र में सहरिया जनजाति की स्थिति, वकास एवं चुनौती: डां बंटएश

5 राबर्ट एंड शास्त्री, बारां जीवन दर्शन में जनजातियों की भू मका

6 साहित्य दर्पण